भारतीय-अमेरिकी समुदाय

लिसेट बी. पूल

भारतीय समुदाय ने सैन फ्रांसिस्को के खाड़ी क्षेत्र में एक मुकाम हासिल किया है। वे आत्मविश्वास से भरे हैं और संपन्न हैं। वे आज सिलिकॉन वैली में कम्प्यूटर उद्यमी हैं, प्रमुख अस्पतालों में डॉक्टर हैं, कॉलेजों-विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर हैं, किराने की दुकानों से लेकर बड़े-बड़े कारोबार चला रहे हैं तो अखबार भी निकाल रहे हैं। वे एक ऐसी शानदार विरासत का निर्माण कर रहे हैं, जिससे कोई भी प्रेरणा ले सकता है।

इस मामले में इनके बच्चे भी पीछे नहीं हैं। वे भी एक नई कहानी रच रहे हैं। वे पत्रिकाओं के प्रकाशक, फिल्म निर्माता, गायक और फैशन डिजाइनर के रूप में भारतीय विरासत और अमेरिका में अपने अनुभवों को एक सूत्र में गूंथकर गानों, फिल्मों, कहानियों और फैशन शो में नए रंग भर रहे हैं। वे जो रच रहे हैं, वह अपने आप में नया और एकदम हटकर है। उत्तरी कैलिफोर्निया में भारतीय मूल के लोगों की तादाद दो लाख से ज्यादा है। उत्तरी अमेरिका में सबसे ज्यादा भारतीय यहीं रहते हैं। इन लोगों के प्रयासों का ही नतीजा है कि यहां जल्द ही 3700 वर्गमीटर क्षेत्रफल में करोड़ों डॉलर की लागत से नया इंडियन कम्युनिटी सेंटर (आईसीसी) बनेगा। यह मौजूदा भारतीय सामुदायिक केंद्र से करीब दोगुना होगा। आईसीसी के अध्यक्ष तलत हसन का कहना है कि यह उत्तरी अमेरिका में भारतीयों का सबसे बड़ा सामुदायिक केंद्र होगा। तलत कहते हैं कि यह केंद्र सिर्फ इस बात का सबूत नहीं है कि आज हम किस मुकाम पर हैं और कितने संपन्न हैं, बल्कि यह हमारी उस बढ़ती आबादी की जरूरतों को भी रेखांकित करता है, जो चाहती है कि वह अपनी संस्कृति, विरासत और अपने सामाजिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को समझ सके, उन्हें सुरक्षित रख सके।

इस केंद्र को अमली जामा पहनाने का काम तेजी पर है। जमीन ली जा चुकी है और पैसा इकट्ठा करने का काम चल रहा है। अनुमान है कि इस पर करीब एक करोड़ 50 लाख डॉलर का खर्चा आ जाएगा। यह केंद्र मिलपिटास में पुराने सामुदायिक केंद्र के पास ही बनेगा। इसमें ऐसा पहला क्लीनिक बनाया जाएगा जो सभी समुदायों के लोगों को मुफ्त चिकित्सा सेवा मुहैया कराएगा। क्लीनिक में स्वयंसेवी डॉक्टरों और नर्सों द्वारा अपनी सेवाएं दी जाएंगी। जाहिर है कि यह केंद्र स्थानीय और राज्य स्तर पर लोगों को आपस में जोड़ेगा। सामाजिक सद्भाव को नई ऊंचाइयां प्रदान करेगा। सामाजिक सद्भाव बढ़ाने की ऐसी कोशिशों के बावजूद यह भी हकीकत है कि उच्च तकनीकी क्षेत्रों में भारत से कराई जाने वाली आउटसोर्सिंग से स्थानीय जनता में नाराजगी भी है। खासकर मीडिया में इस बाबत काफी बहस चल रही है। लेकिन इसी के साथ यह भी सच है कि साठ के दशक में हिंदुस्तान से पढ़ाई और रोजगार के लिए यहां आए लोग, यहां उन्हें मिली प्रतिष्ठा और पहचान से संतुष्ट हैं। इस बारे में सोचने पर उनकी आंखों में एक चमक-सी आ जाती है। इनमें से कई लोगों के मुताबिक उन्होंने यहां बसने का फैसला इसलिए किया, क्योंकि उन्हें लगा कि यहां बसा सिख समुदाय इस काम में उनके लिए खासा मददगार साबित हो सकता है, उनकी ताकत बन सकता है। कैलिफोर्निया राज्य में सिखों का बसना 19वीं सदी के प्रारंभ में शुरु हुआ था। उन्होंने इसकी शुरुआत खाड़ी क्षेत्र से कोई डेढ़ सौ मील दूर उत्तर में बसे यूबा शहर से की थी। तब वे किसान के रूप में यहां आए थे और एक समूह में साथ रहते थे। इसके बाद चिकित्सा, इंजीनियरिंग और बिजनेस से जुड़े लोगों का यहां आना शुरू हुआ, जिन्होंने महानगरों में अपने आशियाने बनाए। शुरुआती दौर में यहां आए लोगों ने निश्चित रूप से काफी संघर्ष किया और उनके बच्चों को एबीसीडी (अमेरिकन बॉर्न कन्फ्यूज्ड देसी) जैसे खिताब भी मिले, मगर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अमेरिका में अपनी जगह बनाई।

दीपक श्रीवास्तव एक पत्रिका निकालते हैं। कहते हैं कि एक भारतीय होना अच्छा लगता है। उनके मुताबिक, यहां रह रहे 25 से 40 की उम्र के लोगों की यहां पारिवारिक जड़ें बन गई हैं। ये खासे पढ़े-लिखे हैं, अपने विषय में कम से कम मास्टर्स की डिग्री रखते हैं, अच्छे पदों पर काम कर रहे हैं और खर्च करने के लिए इनके पास काफी पैसा है। इनके सामने अस्तित्व बनाए रखने का सवाल नहीं है। ये उस संघर्ष से बहुत दूर हैं, जो इनके माता-पिता ने यहां आकर किया था। इन्हें सिल्क की साड़ी पहनना अच्छा लगता है तो टाइट जीन्स भी इनको पसंद आती है। ये अपनी एक खास पहचान बनाए रखना चाहते हैं। ये अमेरिका से भी जुड़े हुए हैं और अपनी जड़ों को भी नहीं भूले हैं।

साभार: इंडिया कम्युनिटी सेंटर

दाएं: डिजाइनर स्वाति कपूर एक ग्राहक को इवनिंग कोट पसंद करा रही हैं।
बाएं: खाड़ी क्षेत्र में योग प्रशिक्षक महेंद्र लोमूर से बहुत-से लोग योग सीखने आते हैं।

नई पीढ़ी के भारतीय-अमेरिकी कारोबार और सामाजिक-संस्कृति

साभार: कॉन्फ्रेंसेलफोटोग्राफी डॉट कॉम

मामलों की अपनी विरासत को बांटने में दिलचस्पी ले रहे हैं।

दीपक ने इनके दिलों पर लिखी इस इबारत को बहुत पहले पढ़ लिया था। तभी तो उन्होंने इस वर्ग को ध्यान में रखते हुए 'निर्वाण' नाम की पत्रिका शुरू की। इसके लिए उनको अपना घर भी बेचना पड़ा था। दो साल के अंदर ही यह त्रैमासिक पत्रिका उम्दा किस्म के कागज पर निकलने लगी और बड़ी संख्या में लोग इससे जुड़ गए। 'निर्वाण' में जहां कहानियां, यात्रा और सेहत संबंधी सलाहें, फैशन टिप्स तथा व्यक्तिगत अनुभव होते हैं, वहीं युवा भारतीय पेशेवरों को लक्ष्य करके इसे अध्यात्म के रंगों से भी रंगा जाता है। भारतीयों के अलावा अन्य दक्षिण एशियाई समुदायों को भी यह पत्रिका पसंद आती है।

फराह अहमद 'निर्वाण वूमन' की कार्यकारी संपादक और अधिवक्ता हैं। फिजियोलॉजी में स्नातक फराह ने वर्जीनिया विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री भी ली है। वह पत्रिका के प्रिंट और इंटरनेट संस्करण के लिए विज्ञापन का काम देखती हैं। उनका समय न्यूयॉर्क और कैलिफोर्निया में बीतता है। न्यूयॉर्क के मैनहट्टन इलाके से एक टेलिफोन इंटरव्यू में वह कहती हैं, ''30 से अधिक की मेरी पीढ़ी की महिलाओं को दो दुनियाओं (भारत और अमेरिका) को करीब से देखने-जानने का मौका मिला है। हम बिजनेस या फिर मौज-मस्ती के लिए उत्तरी अमेरिका, यूरोप, एशिया या फिर कहीं भी चले जाते हैं। हमारे सरोकार वैश्विक हैं। समुदाय और परिवार हमारे लिए बहुत मायने रखते हैं। अपनी उपलब्धियों और व्यक्तिगत आजादी को बनाए रखते हुए हम अपनी विरासत और संस्कृति को सम्मान देते हैं तथा उसका भरपूर प्रचार भी करते हैं। यही सोच और सरोकार हमारी पत्रिका की आत्मा हैं।''

आयोजन के जरिए हम विश्व स्तर पर अपनी मौजूदगी दर्ज करा सकेंगे। उनके मुताबिक, हम जिंदगी में सिर्फ मौज-मस्ती, सैर-सपाटे आदि को ही बढ़ावा नहीं देना चाहते, बल्कि हम चाहते हैं कि लोग शिक्षित, परोपकारी और उदार बनें। ये वे मूल्य हैं जो इंसान का आंतरिक सौंदर्य बढ़ाते हैं, उसे शांति प्रदान करते हैं। इन्हीं के कारण उन दो समाजों (भारत और अमेरिका) को जोड़ने में मदद मिलती है, जिनमें हम रहते हैं। दोनों समाजों से जुड़े रहने की काबिलियत आज कई लोगों के लिए खास मायने रखती है। इसी का नतीजा है कि ऐसे लोगों ने मीडिया, संगीत, मनोरंजन, फैशन डिजाइनिंग, शिक्षा और सेहत के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान कायम की है। राज मठाई एनबीसी11 के खेल निदेशक हैं और रात में होने वाले खेलों के प्रसारण में एंकरिंग भी करते हैं। आज अमेरिका का शायद ही ऐसा कोई शख्स होगा जो उनके नाम से वाकिफ न हो। एम. नाइट श्यामलान हॉलीवुड की चर्चित हस्ती हैं। उनकी नई पिक्चर 'लेडी इन द वॉटर' अभी पिछले ही दिनों रिलीज

नीचे बाएं: चारु प्रकाश अपने बेटों अतिल (बाएं) और रोहन को खाने की सज्जा के गुर बता रही हैं।

नीचे: निर्वाण वुमैन के प्रकाशक दीपक श्रीवास्तव (बाएं), प्रबंधन और सौंदर्य संपादक सलमा हक और निर्वाण मीडिया समूह की सीईओ और प्रेसिडेंट जयश्री पाटिल अपनी पत्रिका के नवीनतम अंक के साथ।

दाएं: सितारवादक, पियानोवादक और भारतीय शास्त्रीय संगीत की कंपोजर अनुष्का शंकर ने इस संगीत को अपने कार्यक्रमों से लोकप्रिय बनाया है।

सिमेट बी. पुल

फराह की पत्रिका का मुख्यालय सिलिकॉन वैली के माउंटेन व्यू में है। यहीं हॉटमेल के जनक सबीर भाटिया के दफ्तर भी हैं। शायद यह इसी का असर हो कि फराह की पत्रिका में फोटोग्राफी और ग्राफिक्स ले-आउट के लिए अत्याधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है और ई-मेल, ऑनलाइन फोल्डर्स, फैक्स तथा पूरे अमेरिका और दुनिया भर में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए लेखकों, विज्ञापनदाताओं आदि से संपर्क कर पत्रिका को तैयार किया जाता है। इसके संपादकों के अनुसार, मौजूदा समय में इसकी प्रसार संख्या 40 हजार है। पत्रिका का ऑनलाइन संस्करण मिज (सुश्री) निर्वाण प्रतियोगिता का आयोजन करने जा रहा है। इसमें पाठक प्रतियोगियों को नामजद करेंगे और ऑनलाइन वोटिंग के जरिए सुपर मॉडल प्रतियोगियों का चयन किया जाएगा।

निर्वाण मीडिया ग्रुप की प्रेसिडेंट और सीईओ जयश्री पाटिल कहती हैं कि इस

हुई है। विश्वविख्यात सितारवादक रविशंकर की बेटी अनुष्का शंकर भी अब अमेरिका में एक परिचित नाम है। अनुष्का ने दक्षिण कैलिफोर्निया के तटीय शहर एनसिनिटास से ग्रेजुएशन किया। अनुष्का का चौथा सोलो अल्बम 'राइज' पिछले साल जारी हुआ।

तिरुअनंतपुरम में जन्मे राज मठाई दो बार एमी अवॉर्ड से सम्मानित किए जा चुके हैं। वह टीवी के पर्दे पर ही नहीं, बाहर भी काफी लोकप्रिय हैं। राज लोकप्रिय कार्यक्रम 'स्पोर्ट्स संडे' की मेजबानी करते हैं, जिसे क्षेत्र की प्रमुख खेल हस्तियां काफी चाव के साथ देखा करती हैं। भारतीय समुदाय के कार्यक्रमों के दौरान भी वह अपने शो करते हैं। उनकी आकर्षक मुस्कान और कपड़े पहनने का उनका अंदाज उन्हें विभिन्न चैरिटी एवम अन्य कार्यक्रमों का अभिन्न हिस्सा बना देता है। मुख्यधारा के मीडिया का एक और चर्चित चेहरा है- डॉ. संजय गुप्ता। वह सीएनएन

''मैं यहां फ्रीमोंट और खाड़ी इलाके में उतना ही घर जैसा महसूस करती हूं,

के वरिष्ठ चिकित्सा संवाददाता हैं। डॉ. गुप्ता अटलांटा, जॉर्जिया में एमोरी यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मेडिसिन में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। वह यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल और ग्रैडी मेमोरियल हॉस्पिटल में बतौर मुख्य न्यूरो सर्जन काम करते हैं। सीएनएन पर वह हर सप्ताहांत में आधे घंटे के शो 'हाउस कॉल विद डॉ. संजय गुप्ता' की मेजबानी करते हैं। पिछले साल उन्होंने इराक में चिकित्सा संबंधी रिपोर्टिंग की और फिर अमेरिका में चक्रवाती तूफान कैटरीना से हुई तबाही के दौरान मेडिकल रिपोर्टिंग की। एशियाई समुदाय के बहुत से लोग डॉ. संजय को कई एशियाई लोगों को चिकित्सा और पत्रकारिता के पेशे में लाने का श्रेय देते हैं।

किरण अहलूवालिया कम उम्र में ही अमेरिका आ गई थीं। एमबीए करने के बाद वह कनाडा में बॉण्ड के कारोबार से जुड़ गई थीं, लेकिन यह काम उनको जमा नहीं। किरण कनाडा से वापस अमेरिका आ गईं और यहां आकर उन्होंने संगीत को अपना साथी बना लिया। अभी हाल में ही उनकी गजलों की एक सीडी जारी हुई है। किरण नए दौर के गानों को दक्षिण एशिया के लोकप्रिय परंपरागत संगीत के साथ गाती हैं। वह भी अमेरिका और कनाडा के बीच सफर करती रहती हैं। वह कहती हैं कि कला के अन्य रूपों की तरह संगीत भी उत्तरी अमेरिका में दक्षिण एशियाई लोगों को करीब लाने का काम कर रहा है। एनपीआर के एक ब्रॉडकास्टर से बातचीत में वह कहती हैं कि मेरे सरोकार अमेरिका और कनाडा दोनों से ही जुड़े हुए हैं। दोनों ही देशों में दक्षिण एशियाई मूल के लोगों की नई पीढ़ी अपनी मौजूदगी दर्ज करा रही है और दोनों ही जगह इनमें से करोड़पति उभर रहे हैं। इन लोगों के माता-पिता भारत, पाकिस्तान या बांग्लादेश में पैदा हुए, लेकिन इनका जन्म कनाडा या अमेरिका में हुआ है। ये लोग दो संस्कृतियों के बीच पले-बढ़े हैं और इन्हें अपनी एक अलग पहचान बनानी है। ये दो संस्कृतियों के बीच संतुलन साधने में जुटे हुए हैं।

अनुष्का एक सितारवादक, पियानोवादक, संचालक और कम्पोजर हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत से उन्हें गहरा लगाव है। वह स्वीकार करती हैं कि वह यह साबित करने के मिशन में जुटी हुई हैं कि भारतीय शास्त्रीय संगीत भी बॉलीवुड पॉप की तरह ही फैशनेबल हो सकता है। मई 2005 में 'राइज' के रिलीज होने से पहले अनुष्का और उनके पिता पं. रविशंकर ने सैन फ्रांसिस्को ओपॅरा हाउस में एक कार्यक्रम कर सबको चमत्कृत कर दिया था। 'टाइम' पत्रिका के एशिया संस्करण को दिए एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा, ''मैं युवा पीढ़ी को शास्त्रीय संगीत से जोड़ने का प्रयास कर रही हूं। मेरे पिता ने यह प्रयास कई दशकों तक किया, लेकिन यह जरूरी नहीं कि मेरी उम्र (23 साल) के आसपास के लोग संगीत के बारे में उतना ही जानते हैं, जितना कि मेरे पिता के युवा प्रशंसक जानते थे।'' टाइम ने अनुष्का को '40 से कम उम्र के टॉप 20' की सूची में शुमार किया है।

इन मूल्यों से जुड़ाव और उनके प्रसार की इच्छा ने स्वाति कपूर को भारतीय फैशन को बहुसांस्कृतिक तानेबाने में सजाने के लिए प्रेरित किया। उनके हर परिधान में भारतीयता की झलक पूरी शिद्दत के साथ मौजूद रहती है। मुगल शैली की कसीदाकारी, मनके, धागों में जड़े शीशे स्वाति के परिधानों को एक नया सौंदर्य प्रदान करते हैं। सिल्क साड़ियां, कसीदाकारी की हुई पैंटें, अचकन, कुर्ते, स्कर्ट्स, कान की बालियां, कंगन तथा और भी बहुत कुछ.. स्वाति की रेंज काफी विस्तृत है। स्वाति के ग्राहकों में अमेरिकी, मध्य-पूर्व के लोग, दक्षिण एशिया के भारतीय व पाकिस्तानी, युवा कलाकार, लिज फिगुएरोआ (डी-फ्रीमोन्ट के पूर्व स्टेट सीनेटर) जैसे राजनीतिज्ञ और सान फ्रांसिस्को की बड़ी-बड़ी हस्तियां शामिल हैं। कपूर कहती हैं कि वह अपने ग्राहकों से उनकी पसंद के बारे में खुलकर विचार-विमर्श करती हैं, उनको डिजाइन विस्तार से समझाती हैं और फिर दिल्ली तथा मुंबई

साभार: किरण कुर्तेन

लिसेट की, पूल

के वस्त्र उद्योग के सहयोग से परिधान तैयार करती हैं और ऐसे में जो वस्त्र तैयार होता है, वह अद्भुत होता है। हर ड्रेस अपने में अनूठी होती है। वह कहती हैं कि, ''हमारी जिंदगी ग्लोबल है और फैशन भी। मैं कोशिश करती हूं कि परिधान ग्राहक की जरूरत के मुताबिक हो और उस पर अच्छा लगे। एक सही ड्रेस मेरे ग्राहक को अनूठा बनाती है और उसके व्यक्तित्व को मजबूती प्रदान करती है। यह एक पर्सनल टच होता है।''

स्वाति कहती हैं, ''तीन साल पहले जब डॉटकॉम इंडस्ट्री का बुलबुला फूटा था तो ग्राफिक डिजाइन में मेरी मास्टर्स की डिग्री, कला से मेरे लगाव और प्रवासियों के परंपरागत परिधानों के प्रति अमेरिकी जनता के आकर्षण ने मुझे कुछ नया और कुछ हटकर करने की प्रेरणा दी। मैंने तय कर लिया कि मैं अपनी बॉस खुद बनूंगी। शुरुआती दौर में मैंने परिधान तैयार करने में दिन में 20-20 घंटे तक लगाए।'' स्वाति का बिजनेस आज ऊंचाइयों पर है। उनके फैशन शो खचाखच भरे रहते हैं। अपने छह महीने के बेटे शान को सीने से लगाते हुए वह कहती हैं कि मेरे पति मेरे सबसे बड़े प्रशंसक हैं। स्वाति का जन्म रामपुर (भारत) में हुआ था।

वर्ष 2000 की अमेरिकी जनगणना के अनुसार, कैलिफोर्निया राज्य में एशियाई मूल के लोगों की जनसंख्या 11 प्रतिशत थी। लेकिन खाड़ी क्षेत्र की नौ काउंटियों में इनकी आबादी 19 फीसदी थी। स्थानीय लैटिनो समुदाय से सिर्फ 40 हजार कम। अगर ऐसे एशियाई लोगों को भी शामिल कर लिया जाए जो अमेरिकी नागरिक नहीं हैं तो राज्य में एशियाई मूल के लोगों की आबादी 12.3 फीसदी और खाड़ी क्षेत्र में 21 प्रतिशत बैठती है।

चारु प्रकाश को पाक कला में महारत हासिल है। उनका कहना है कि मैं यहां फ्रीमोन्ट में घर जैसा ही महसूस करती हूं और खाड़ी क्षेत्र मेरे लिए भारत जैसा ही है। चारु कहती हैं कि जब हम पहली बार इस इलाके में आए थे, तब से आज तक हम एक लंबा सफर तय कर चुके हैं। पाक कला की एक्सपर्ट चारु अपने बेटों समेत औरों को भी लजीज भोजन बनाने के गुर सिखाती हैं। मिलपिटास में उनकी पाक

जैसा भारत में करती। पहली बार यहां आने के बाद हमने लंबा सफर तय किया है।''

-चारु प्रकाश

साभार: इंडिया कम्युनिटी सेंटर

मिलपिटास, कैलिफोर्निया के इंडिया कम्युनिटी सेंटर से जुड़ी महिलाएं अमेरिकी पॉप स्पिन के साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत करती हुईं।

कला की कक्षाएं आईसीसी के सौजन्य से चलती हैं। ये कक्षाएं जल्द ही भर जाती हैं। वह अपने छात्रों को हवाई, चीन, इटली, लेबनान, मिस्र के परंपरागत व्यंजन बनाना सिखाने के साथ ही भारत और पाकिस्तान के विभिन्न प्रांतों के लजीज व्यंजन बनाना सिखाती हैं। चारु के मुताबिक, दीपावली के दौरान खाने-पीने का मौसम चरम पर होता है। इस मौके को वह परंपरागत तरीके से मनाना पसंद करती हैं और उनकी मित्र मंडली तथा परिजन इस दौरान उनके साथ होते हैं। इस अवसर पर चारु अपनी सेंट्रल टेबल को बहुत खूबसूरत तरीके से सजाती हैं। मेहमानों का स्वागत लजीज व्यंजनों से तो किया ही जाता है, मिष्ठान भी एक से बढ़कर एक होते हैं। पिश्ते से भरी डीप फ्राइड गुलाब जामुन पेस्ट्रियां, नारियल की बर्फी, गाजर और अंजीर, रसमलाई तथा और भी बहुत कुछ। उनकी सबसे लोकप्रिय डिशें हैं- चिकन टिक्का मसाला, भुना हुआ चिकन, पनीर और सब्जियों के मिश्रण से बने व्यंजन तथा समोसा रोल्स आदि।

आईसीसी के अध्यक्ष तलत हसन कहते हैं- हम इस बात के गवाह हैं कि हमारा समाज ज्ञान प्राप्त करना और उसे बांटना चाहता है। हम पर यह जिम्मेदारी है कि हम कुछ ऐसा छोड़कर जाएं, जो स्थायी हो। जाहिर है यह सिर्फ पैसा नहीं हो सकता। यदि हमने अपनी संस्कृति, परंपरा और विरासत से आने वाली पीढ़ी को वाकिफ नहीं कराया और व्यापक अमेरिकी समाज को कुछ नहीं दिया तो हम अपनी भावी पीढ़ियों की दृष्टि से अच्छा नहीं कर रहे होंगे।

आज मिलपिटास के जिस भवन में आईसीसी है, वह 1850 वर्गमीटर का है और करीब ढाई हजार सदस्य सक्रिय तौर पर इस केंद्र से जुड़े हुए हैं। आईसीसी की एक छोटी-सी शाखा पड़ोस के सनीवले में है। आईसीसी भारतीय समुदाय को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए कई तरह के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मनोरंजक कार्यक्रमों का आयोजन करता रहता है। यह स्थानीय आबादी को भारत की कला, संस्कृति और परंपरा से रूबरू करने के लिए भी सक्रिय रहता है। संस्था के संरक्षकों में काकेशियाई, मैक्सिकन और चीनी मूल के लोग शामिल हैं। संस्था के कार्यक्रमों में बड़े और बच्चे समान रूप से शिरकत करते हैं। इसके योग और करॉअकी फ्राइडे कार्यक्रम काफी लोकप्रिय हैं। आईसीसी के अनुसार, विशेष अवसरों- दीपावली, तमिल दिवस और अन्य त्योहारों पर होने वाले आयोजनों में हर हफ्ते करीब छह हजार तक लोग पहुंचते हैं। संस्था का काम पूरी तरह से अनुदान आदि से चलता है, जो कि सदस्यता शुल्क (50 डॉलर प्रति परिवार), कॉरपोरेट जगत और सरकार से मिलता है।

साल 2005 के आखिर में संस्था ने अपना दूसरा सालाना भोज कार्यक्रम आयोजित किया और बच्चों तथा बुजुर्गों के कल्याण के लिए चलाए जाने वाले कार्यक्रमों के लिए करीब तीन लाख डॉलर एकत्र किए। इस मौके पर 'जॉलीवुड डांसर्स' नाम के नृत्य समूह की शुरुआत भी हुई। यह वरिष्ठ नागरिकों द्वारा बनाया गया समूह है। इसे रात्रिभोज के लिए आए 680 मेहमानों की जबरदस्त तारीफ मिली।

आईसीसी की मार्केटिंग और सदस्यता सेवा की निदेशक तनुजा बहल कहती हैं कि इस समूह की सदस्याओं ने जब परंपरागत भारतीय संगीत और अमेरिकन पॉप के साथ दिलकश ज्यूलरी से सजी अपनी नीली और सुनहरी साड़ियां लहराईं तो देखने वालों के मुंह खुले के खुले रह गए। उन्हें यकीन ही नहीं हो रहा था कि कल तक हमारे जो बुजुर्ग जोड़ों में दर्द और तमाम तरह की तकलीफों का जिक्र किया करते थे, वे इतने कमाल के डांसर भी हो सकते हैं।

आईसीसी गोडवानी भाइयों (अनिल और गौतम) के दिमाग की उपज है। ये दोनों भाई यहां आए पहली पीढ़ी के भारतीय हैं और सफल कंप्यूटर उद्यमी भी। आईसीसी भारतीय समुदाय को भविष्य में कई और भी सुविधाएं मुहैया कराने जा रहा है। यह व्यायाम के लिए एक हजार वर्गमीटर जगह, एक ऑडिटोरियम, एक पुस्तकालय, एक मीडिया सेंटर, सम्मेलन कक्ष और क्लास रूम्स उपलब्ध कराने जा रहा है। आयोजक बच्चों और किशोरों के लिए एक समग्र सांस्कृतिक कार्यक्रम भी शुरू करना चाहते हैं। इसके तहत भाषा, नृत्य, गायन, कला और इतिहास की कक्षाएं चलाई जाएंगी। साथ ही एक ऐसा फोरम भी तैयार किया जाएगा जहां बड़े योगाभ्यास कर सकें, पढ़ाई के लिए ग्रुप बना सकें, शास्त्रीय नृत्य कर या सीख सकें और जहां शादी एवं अन्य अवसरों के लिए खान-पान की पूरी व्यवस्था हो सके। केंद्र द्वारा बच्चों के लिए उपलब्ध सेवाओं को बढ़ाया जाएगा। एक मान्यता प्राप्त प्री-स्कूल खोला जाएगा और बच्चों के स्कूल से लौटने के बाद भी उनके लिए कार्यक्रम शुरू किए जाएंगे। बुजुर्गों को आईसीसी के मिलपिटास केंद्र तक लाने-ले जाने की सुविधा देने के साथ ही और कई और सुविधाएं उपलब्ध कराने पर काम हो रहा है। □

***लिसेट बी. पूल** स्वतंत्र पत्रकार हैं और सैन फ्रांसिस्को के खाड़ी क्षेत्र में रहती हैं। वह हेवार्ड की कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी में व्याख्यान देती हैं।*